MODULE NO. 2(PART-2) MONTH - JULY, 2020

[HANDOUT]

कक्षा - सातवीं विषय - संस्कृत (तृतीय भाषा)

पाठ संख्या - 4 - हास्यबालकविसम्मेलनम्

(हास्य बालकवि सम्मेलन)

पाठ का सारांश :

प्रस्तुत पाठ में चार बालक कवियों की विभिन्न प्रकार की वेशभूषा धारण करके विराजमान हैं | संचालक महोदय श्रोतागणों को शांत रहने का आग्रह करता है |

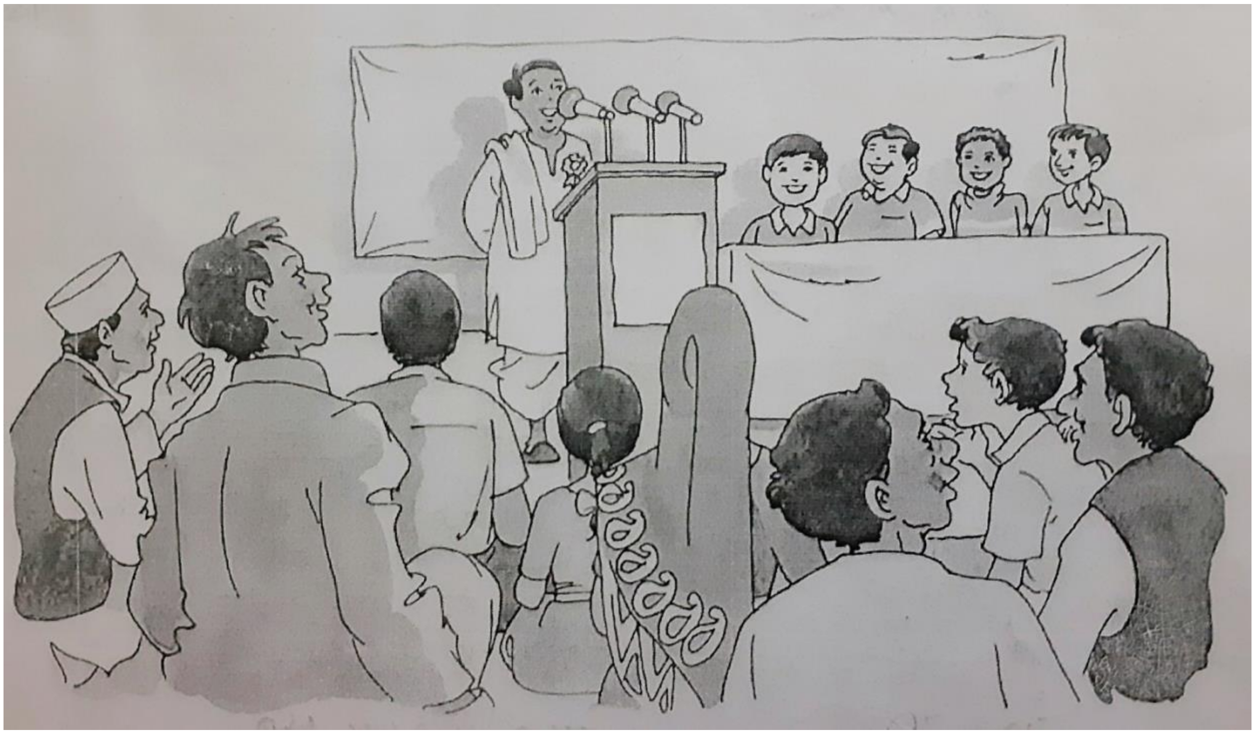

प्रस्तुत काव्य सम्मेलन में चार बाल कवि हैं जिनके नाम इस प्रकार से हैं -

1. गजाधर
2. कालान्तक

3. तुंदिल

4. चार्वाक

बाल कवि गजाधर ने वैद्य पर व्यंग्य करते हुए उसे यमराज का भाई बताते हुए कहा है कि यमराज केवल प्राण हरण करता है लेकिन वैद्य प्राण और धन दोनों का हरण करता है |

बाल कवि कालान्तक एक वैद्य है जो जलती हुई चिता को देखकर आश्चर्य चकित होकर सोचने लगता है कि इस व्यक्ति की चिकित्सा करने मैं नहीं गया और नहीं मेरा कोई भाई गया फिर भी इसकी मौत कैसे हुई |

बाल कवि तुंदिल ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कविता सुनाते हुए कहा कि दूसरे के घर का खाना मिल जाए तो पेटभर कर खाते रहो चाहे शरीर को हानि ही क्यों न हो क्योंकि शरीर तो बार-बार मिलता रहता है लेकिन दूसरे कि भोजन मिलना दुर्लभ है |

बाल कवि चार्वाक ने अपने काव्य-पाठ में पौष्टिक भोजन ग्रहण करके शरीर को बलिष्ठ बनाने पर को कहा | शरीर को बलिष्ठ बनाने के लिए घी आदि खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं फिर भी कर्ज करके घी खरीदकर खाना चाहिए और मेहनत करके पैसे कमाकर कर्ज को उतार देना चाहिए |

उन चारों बाल कवियों की कविताएँ सुनकर , उनसे प्रेरित होकर एक बालक आशु कविता की रचना करके सुनाता है | वह उन चारों कवियों को नमस्कार ही करता है |